6 काका कालेलकर

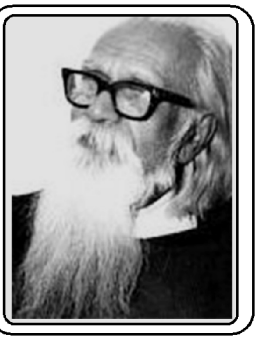

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **पूरा नाम**–दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर।
- **जन्म-स्थान**–सतारा (महाराष्ट्र)।
- **जन्म एवं मृत्यु**–सन् 1 दिसम्बर, 1885 ई0, 21 अगस्त, 1981 ई0।
- **भाषा**–सरल, बोधगम्य, प्रवाहयुक्त खड़ीबोली।
- **शैली**–विवेचनात्मक, विवरणात्मक, व्यंग्यात्मक, परिचयात्मक, वर्णनात्मक, चित्रात्मक।
- शुक्ल एवं शुक्लोत्तर-युग के लेखक।
- स्वतन्त्रता-संग्राम के सक्रिय कार्यकर्त्ता।
- **हिन्दी साहित्य में स्थान**–दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान।

जीवन-परिचय–काका कालेलकर का जन्म सन् 1885 ई0 में महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ था। ये बड़े प्रतिभासम्पन्न थे। मराठी इनकी मातृभाषा थी, पर इन्होंने संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती और बँगला भाषाओं का भी गम्भीर अध्ययन कर लिया था। जिन राष्ट्रीय नेताओं एवं महापुरुषों ने राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में विशेष उत्सुकता दिखायी, उनकी पंक्ति में काका कालेलकर का भी नाम आता है। इन्होंने राष्ट्रभाषा के प्रचार को राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत माना है। गाँधीजी के नेतृत्व में जितने भी आंदोलन हुए, काका कालेलकर ने सभी में भाग लिया और कुल मिलाकर 5 वर्ष कैद में बिताए। 1930 में पूना के यरवदा जेल में उन्होंने गाँधीजी के साथ महत्त्वपूर्ण समय बिताया। महात्मा गाँधी के सम्पर्क से इनका हिन्दी-प्रेम और भी जागृत हुआ। दक्षिण भारत, विशेषकर गुजरात में इन्होंने हिन्दी का प्रचार विशेष रूप से किया। प्राचीन भारतीय संस्कृति, नीति, इतिहास, भूगोल आदि के साथ ही इन्होंने युगीन समस्याओं पर भी अपनी सशक्त लेखनी चलायी। इन्होंने शान्ति निकेतन में अध्यापक, साबरमती आश्रम में प्रधानाध्यापक और बड़ौदा में राष्ट्रीय शाला के आचार्य के पद पर भी कार्य किये। गाँधीजी की मृत्यु के बाद उनकी स्मृति में निर्मित 'गाँधी संग्रहालय' के प्रथम संचालक यही थे। स्वतन्त्रता सेनानी होने के कारण अनेक बार जेल भी गये। संविधान सभा के सदस्य भी ये रहे। सन् 1952 से 1957 ई0 तक राज्य-सभा के सदस्य तथा अनेक आयोगों के अध्यक्ष रहे। भारत सरकार ने 'पद्मभूषण', राष्ट्र भाषा प्रचार समिति ने 'गाँधी पुरस्कार' से कालेलकर जी को सम्मानित किया है। ये रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं पुरुषोत्तमदास टण्डन के भी सम्पर्क में रहे। इनका निधन 21 अगस्त, 1981 ई0 को हो गया।

साहित्यिक परिचय–काका कालेलकर मराठीभाषी होते हुए भी हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के प्रति जो रुचि प्रदर्शित की, वह हिन्दी-भाषियों के लिए अनुकरणीय है। इनका हिन्दी-साहित्य निबन्ध, जीवनी, संस्मरण, यात्रावृत्त आदि गद्य-विधाओं के रूप में उपलब्ध होता है। इन्होंने हिन्दी एवं गुजराती में तो अनेक रचनाओं का सृजन किया ही, साथ ही हिन्दी भाषा में अपनी

कई गुजराती रचनाओं का अनुवाद भी किया। इनकी रचनाओं पर अनेक राष्ट्रीय नेताओं एवं साहित्यकारों का प्रभाव परिलक्षित होता है। तत्कालीन समस्याओं पर भी इन्होंने कई सशक्त रचनाओं का सृजन किया। कालेलकर जी की रचनाओं में भारतीय संस्कृति के विभिन्न आयामों की झलक दिखायी देती है। व्यक्ति के जीवन के अन्तर्तम तक इनकी पैठ थी, इसलिए जब ये किसी के जीवन की विवेचना करते थे तो रचना में उसका व्यक्तित्व उभर आता था।

कृतियाँ—कालेलकर जी की प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं–

निबन्ध-संग्रह—'जीवन काव्य', 'जीवन साहित्य' एवं 'सर्वोदय'। **यात्रा-वृत्तान्त**—'हिमालय प्रवास', 'यात्रा', 'उस पार के पड़ोसी' एवं 'लोक-माता'। **संस्मरण**—'बापू की झाँकियाँ'। **आत्म-चरित**—'जीवन लीला' एवं 'सर्वोदय'। इनमें काका साहब के यथार्थ जीवन की झाँकी है।

भाषा-शैली—कालेलकर जी की भाषा परिष्कृत खड़ीबोली है। उसमें प्रवाह, ओज तथा अकृत्रिमता है। ये अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे, इसीलिए इनकी हिन्दी भाषा में रचित रचनाओं में अंग्रेजी, अरबी, फारसी, गुजराती, मराठी के शब्द भी मिल जाते हैं। तत्सम, तद्भव, देशज आदि सभी शब्द-रूप इनकी भाषा में एक साथ देखे जा सकते हैं। मुहावरों और कहावतों का प्रयोग भी इन्होंने किया है। भाषा में प्रसंग के अनुसार ओजगुण भी है। विषय और प्रसंग के अनुरूप कालेलकर जी ने परिचयात्मक, विवेचनात्मक, आत्मकथात्मक, विवरणात्मक, व्यंग्यात्मक, चित्रात्मक, वर्णनात्मक आदि शैलियाँ अपनायी हैं। इस प्रकार प्रसंग एवं विषय के अनुरूप इनकी भाषा-शैली बहुत ही सजीव, सरल एवं प्रभावपूर्ण है।

'**निष्ठामूर्ति कस्तूरबा**' में राष्ट्रमाता कस्तूरबा के जीवन की ऐसी अनेक झाँकियाँ दी गयी हैं जो भारतीय नारी के गरिमामय रूप का सुन्दर चित्र प्रस्तुत करती हैं। साथ ही इस पाठ में भारतीय संस्कृति के सफल अध्येता और राष्ट्रप्रेमी काका साहब की उपर्युक्त वर्णित अधिकांश साहित्यिक विशेषताओं के दर्शन भी होते हैं। विवेचनात्मक शैली में लिखे गये प्रस्तुत पाठ की भाषा अपेक्षाकृत संस्कृतनिष्ठ एवं परिष्कृत है। जैसे–दुनिया में दो अमोघ शक्तियाँ हैं–शब्द और कृति। इसमें कोई शक नहीं कि शब्दों ने सारी पृथ्वी को हिला दिया है, किन्तु अन्तिम शक्ति तो 'कृति' की है। महात्मा जी ने इन दोनों शक्तियों की असाधारण उपासना की है।

●●●

निष्ठामूर्ति कस्तूरबा

महात्मा गाँधी-जैसे महान् पुरुष की सहधर्मचारिणी के तौर पर पूज्य कस्तूरबा के बारे में राष्ट्र को आदर मालूम होना स्वाभाविक है। राष्ट्र ने महात्मा जी को 'बापू जी' के नाम से राष्ट्रपिता के स्थान पर कायम किया ही है। इसलिए कस्तूरबा भी 'बा' के एकाक्षरी नाम से राष्ट्रमाता बन सकी हैं।

किन्तु सिर्फ महात्मा जी के साथ के सम्बन्ध के कारण ही नहीं, बल्कि अपने आन्तरिक सद्‌गुण और निष्ठा के कारण भी कस्तूरबा राष्ट्रमाता बन पायी हैं। चाहे दक्षिण अफ्रीका में हों या हिन्दुस्तान में, सरकार के खिलाफ लड़ाई के समय जब-जब चारित्र्य का तेज प्रकट करने का मौका आया कस्तूरबा हमेशा इस दिव्य कसौटी से सफलतापूर्वक पार हुई हैं।

इससे भी विशेष बात यह है कि बड़ी तेजी से बदलते हुए आज के युग में भी आर्य सती स्त्री का जो आदर्श हिन्दुस्तान ने अपने हृदय में कायम रखा है, उस आदर्श की जीवित प्रतिमा के रूप में राष्ट्र पूज्य कस्तूरबा को पहचानता है। इस तरह की विविध लोकोत्तर योग्यता के कारण आज सारा राष्ट्र कस्तूरबा की पूजा करता है।

कस्तूरबा अनपढ़ थीं। हम यह भी कह सकते हैं कि उनका भाषा ज्ञान सामान्य देहाती से अधिक नहीं था। दक्षिण अफ्रीका में जाकर रहीं इसलिए वह कुछ अंग्रेजी समझ सकती थीं और पचीस-तीस शब्द बोल भी लेती थीं। मिस्टर एण्ड्रूज-जैसे कोई विदेशी मेहमान घर आने पर उन शब्दों की पूँजी से वह अपना काम चला लेतीं और कभी-कभी तो उनके उस सम्भाषण से विनोद भी पैदा हो जाता।

कस्तूरबा को गीता के ऊपर असाधारण श्रद्धा थी। पढ़ानेवाला कोई मिले तो वह भक्तिपूर्वक गीता पढ़ने के लिए बैठ जातीं। किन्तु उनकी गाड़ी कभी भी बहुत आगे नहीं जा सकी। फिर भी आगाखाँ महल में–कारावास के दरमियान–उन्होंने बार-बार गीता के पाठ लेने की कोशिश चालू रखी थी।

उनकी निष्ठा का पात्र दूसरा ग्रन्थ था तुलसी-रामायण। बड़ी मुश्किल से दोपहर के समय उनको आधे घण्टे की जो फुरसत मिलती थी उसमें वह बड़े अक्षरों में छपी तुलसी-रामायण के दोहे चश्मा चढ़ाकर पढ़ने बैठती थीं। उनका यह चित्र देखकर हमें बड़ा मजा आता। कस्तूरबा रामायण भी ठीक ढंग से कभी पढ़ न सकीं। राष्ट्रीय सन्त तुलसीदास के द्वारा लिखा हुआ सती-सीता का वर्णन भले ही वह ठीक समझ न सकी हों, फिर भी प्रत्यक्ष सती-सीता तो बन ही सकीं।

दुनिया में दो अमोघ शक्तियाँ हैं–शब्द और कृति। इसमें कोई शक नहीं कि 'शब्दों' ने सारी पृथ्वी को हिला दिया है। किन्तु अन्तिम शक्ति तो 'कृति' की है। महात्मा जी ने इन दोनों शक्तियों की असाधारण उपासना की है। कस्तूरबा ने इन दोनों शक्तियों में से अधिक श्रेष्ठ शक्ति कृति की नम्रता के साथ उपासना करके सन्तोष माना और जीवनसिद्धि प्राप्त की।

दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने जब उन्हें जेल भेज दिया, कस्तूरबा ने अपना बचाव तक नहीं किया। न कोई सनसनाती पैदा करनेवाला निवेदन प्रकट किया। ''मुझे तो वह कानून तोड़ना ही है जो यह कहता है कि मैं महात्मा जी की धर्मपत्नी नहीं हूँ।'' इतना कहकर वह सीधे जेल में चली गयीं। जेल में उनकी तेजस्विता तोड़ने की कोशिशें वहाँ की सरकार ने बहुत कीं किन्तु अन्त में सरकार की उस समय की जिद्द ही टूट गयी।

डॉक्टर ने जब उन्हें धर्मविरुद्ध खुराक लेने की बात कही तब भी उन्होंने धर्मनिष्ठा पर कोई व्याख्यान नहीं दिया। उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा–''मुझे अखाद्य खाना खाकर जीना नहीं है। फिर भले ही मुझे मौत का सामना करना पड़े।''

कस्तूरबा की कसौटी केवल सरकार ने ही की हो ऐसी बात नहीं है। खुद महात्मा जी ने भी कई बार उनसे कठोर और मर्मस्पर्शी बातें कहीं, तब भी उन्होंने हार कबूल नहीं की। पति का अनुसरण करना ही सती का कर्त्तव्य है, ऐसी उनकी निष्ठा होने के कारण मन में किसी भी प्रकार का सन्देह लाये बिना वह धर्म के मामलों में पति का अनुसरण करती रहीं।

कस्तूरबा के प्रथम दर्शन मुझे शान्ति निकेतन में हुए। सन् 1915 के प्रारम्भ में जब महात्मा जी वहाँ पधारे, तब स्वागत का शुभारम्भ पूरा होते ही सब लोगों ने सोने की तैयारियाँ कीं। आँगन के बीच एक चबूतरा था। महात्मा जी ने कहा, हम दोनों

यहीं सोयेंगे। अगल-बगल में बिस्तरे बिछाकर बापू और बा सो गये और हम सब लोग आँगन में आस-पास अपने बिस्तरे बिछाकर सो गये। उस दिन मुझे लगा, मानो हमें आध्यात्मिक माँ-बाप मिल गये हैं।

उनके आखिरी दर्शन मुझे उस समय हुए जब वह बिड़ला हाउस में गिरफ्तार की गयीं। महात्मा जी को गिरफ्तार करने के लिए सरकार की ओर से कस्तूरबा को कहा गया, 'अगर आपकी इच्छा हो तो आप भी साथ में चल सकती हैं।' बा बोलीं, 'अगर आप गिरफ्तार करें तो मैं जाऊँगी वरना आने की मेरी तैयारी नहीं है।' महात्मा जी जिस सभा में बोलनेवाले थे उस सभा में जाने का उन्होंने निश्चय किया था। पति के गिरफ्तार होने के बाद उनका काम आगे चलाने की जिम्मेदारी बा ने कई बार उठायी है। शाम के समय जब वह व्याख्यान के लिए निकल पड़ीं, सरकारी अमलदारों ने आकर उनसे कहा, 'माता जी सरकार का कहना है कि आप घर पर ही रहें, सभा में जाने का कष्ट न उठायें।' बा ने उस समय उन्हें न देश-सेवा का महत्त्व समझाया और न उन्होंने उन्हें 'देशद्रोह करनेवाले तुम कुत्ते हो' कहकर उनकी निर्भर्त्सना ही की। उन्होंने एक ही वाक्य में सरकार की सूचना का जवाब दिया, 'सभा में जाने का मेरा निश्चय पक्का है, मैं जाऊँगी ही।'

आगाखाँ महल में खाने-पीने की कोई तकलीफ नहीं थी। हवा की दृष्टि से भी स्थान अच्छा था। महात्मा जी का सहवास भी था। किन्तु कस्तूरबा के लिए–यह विचार ही असह्य हुआ कि 'मैं कैद में हूँ।' उन्होंने कई बार कहा–"मुझे यहाँ का वैभव कतई नहीं चाहिए, मुझे तो सेवाग्राम की कुटिया ही पसन्द है।" सरकार ने उनके शरीर को कैद रखा किन्तु उनकी आत्मा को वह कैद सहन नहीं हुई। जिस प्रकार पिंजड़े का पक्षी प्राणों का त्याग करके बन्धनमुक्त हो जाता है उसी प्रकार कस्तूरबा ने सरकार की कैद में अपना शरीर छोड़ा और वह स्वतन्त्र हुईं। उनके इस मूक किन्तु तेजस्वी बलिदान के कारण अंग्रेजी साम्राज्य की नींव ढीली हुई और हिन्दुस्तान पर उनकी हुकूमत कमजोर हुई। कस्तूरबा ने अपनी कृतिनिष्ठा के द्वारा यह दिखा दिया कि शुद्ध और रोचक साहित्य के पहाड़ों की अपेक्षा कृति का एक कण अधिक मूल्यवान् और आबदार होता है। शब्दशास्त्र में जो लोग निपुण होते हैं उनको कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य की हमेशा ही विचिकित्सा करनी पड़ती है। कृतिनिष्ठ लोगों को ऐसी दुविधा कभी परेशान नहीं कर पाती। कस्तूरबा के सामने उनका कर्त्तव्य किसी दीये के समान स्पष्ट था। कभी कोई चर्चा शुरू हो जाती तब 'मुझसे यही होगा' और 'यह नहीं होगा'–इन दो वाक्यों में अपना ही फैसला सुना देतीं।

आश्रम में कस्तूरबा हम लोगों के लिए माँ के समान थीं। सत्याग्रहाश्रम यानी तत्त्वनिष्ठ महात्मा जी की संस्था थी। उग्रशासक मगनलाल भाई उसे चलाते थे। ऐसे स्थान पर अगर वात्सल्य की आर्द्रता हमें मिलती थी तो वह कस्तूरबा से ही। कई बार बा आश्रम के नियमों को ताक पर रख देतीं। आश्रम के बच्चों को जब भूख लगती थी तब उनकी बात बा ही सुनती थीं। नियमनिष्ठ लोगों ने बा के खिलाफ कई बार शिकायतें करके देखीं। किन्तु महात्मा जी को अन्त में हार खाकर निर्णय देना पड़ा कि अपने नियम बा को लागू नहीं होते।

आश्रम में चाहे बड़े-बड़े नेता आयें या मामूली कार्यकर्त्ता आयें, उनके खाने-पीने की पूछताछ अत्यन्त प्रेम के साथ यदि किसी ने की है तो वह पूज्य कस्तूरबा ने ही। आलस्य ने तो उनको कभी छुआ तक नहीं। किसी प्राणघातक बीमारी से मुक्त होकर चंगी हुई हों और शरीर में जरा-सी शक्ति आयी हो कि तुरन्त बा आश्रम की रसोई में जाकर काम करने लग जातीं। ठेठ आखिर में उनके हाथ-पाँव थक गये थे, शरीर जीर्ण-शीर्ण हुआ था। मुँह में एक दाँत बचा नहीं था। आँखें निस्तेज हो गयी थीं तब भी वह रसोई में जातीं और जो काम बन सके, आस्थापूर्वक करतीं। मैं जब उनसे मिलने जाता और जब वह खाने के लिए मुझे कुछ देतीं, तब छोटे बच्चों की तरह हाथ फैलाने में मुझे असाधारण धन्यता का अनुभव होता था।

वह भले ही अशिक्षित रही हों, संस्था चलाने की जिम्मेदारी लेने की महत्त्वाकांक्षा भले ही उनमें कभी जागी नहीं हो, देश में क्या चल रहा है और उसकी सूक्ष्म जानकारी वह प्रश्न पूछ-पूछकर या अखबारों के ऊपर नजर डालकर प्राप्त कर ही लेती थीं।

महात्मा जी जब जेल में थे तब दो-तीन बार राजकीय परिषदों का या शिक्षण सम्मेलनों के अध्यक्ष का स्थान कस्तूरबा को लेना पड़ा था। उनके अध्यक्षीय भाषण लिख देने का काम मुझे करना पड़ा था। मैंने उनसे कहा–"मैं अपनी ओर से एक

भी दलील भाषण में नहीं लाऊँगा। आप जो बतावेंगी, मैं ठीक भाषा में लिख दूँगा।'' हाँ-ना कहकर वह अपने भाषण की दलीलें मुझे बता देतीं। उस समय उनकी वह शक्ति देखकर मैं चकित हो जाता था।

अध्यक्षीय भाषण किसी से लिखवा लेना आसान है। लेकिन परिषद् जब समाप्त होती है, तब उसका उपसंहार करना हर एक को अपनी प्रत्युत्पन्नमति से करना पड़ता है। जब कस्तूरबा ने उपसंहार के भाषण किये उनकी भाषा बहुत ही आसान रहती थी, किन्तु उपसंहार परिपूर्ण सिद्ध होता था। इनके इन भाषणों में परिस्थिति की समझ, भाषा की सावधानी और खानदानी की महत्ता आदि गुण उत्कृष्टता से दिखायी देते थे।

आज के जमाने में स्त्री-जीवन सम्बन्ध के हमारे आदर्श हमने काफी बदल लिये हैं। आज कोई स्त्री अगर कस्तूरबा की तरह अशिक्षित रहे और किसी तरह महत्त्वाकांक्षा का उदय उसमें न दिखायी दे तो हम उसका जीवन यशस्वी या कृतार्थ नहीं कहेंगे। ऐसी हालत में जब कस्तूरबा की मृत्यु हुई पूरे देश ने स्वयं स्फूर्ति से उनका स्मारक बनाने का तय किया और सहज इकट्ठी न हो पाये, इतनी बड़ी निधि इकट्ठी कर दिखायी। इससे यह सिद्ध होता है कि हमारा प्राचीन तेजस्वी आदर्श अब देशमान्य है। हमारी संस्कृति की जड़ें आज भी काफी मजबूत हैं।

यह सब श्रेष्ठता या महत्ता कस्तूरबा में कहाँ से आयी? उनकी जीवन-साधना किस प्रकार की थी? शिक्षण के द्वारा उन्होंने बाहर से कुछ नहीं लिया था। सचमुच, उनमें तो आर्य आदर्श को शोभा देनेवाले कौटुम्बिक सद्‌गुण ही थे। असाधारण मौका मिलते ही और उतनी ही असाधारण कसौटी आ पड़ते ही उन्होंने स्वभावसिद्ध कौटुम्बिक सद्‌गुण व्यापक किये और उनके जोरों पर हर समय जीवन-सिद्धि हासिल की। सूक्ष्म प्रमाण में या छोटे पैमाने पर जो शुद्ध साधना की जाती है उसका तेज इतना लोकोत्तरी होता है कि चाहे कितना ही बड़ा प्रसंग आ पड़े, व्यापक प्रमाण में कसौटी हो, चारित्र्यवान् मनुष्य को अपनी शक्ति का सिर्फ गुणाकार ही करने का होता है।

सती कस्तूरबा सिर्फ अपने संस्कार बल के कारण पातिव्रत्य को, कुटुम्ब-वत्सलता को और तेजस्विता को चिपकाये रहीं और उसी के जोरों महात्मा जी के माहात्म्य के बराबरी में आ सकीं। आज हिन्दू, मुस्लिम, पारसी, सिख, बौद्ध, ईसाई आदि अनेक धर्मी लोगों का यह विशाल देश अत्यन्त निष्ठा के साथ कस्तूरबा की पूजा करता है और स्वातन्त्र्य के पूर्व की शिवरात्रि के दिन उनका स्मरण करके सब लोग अपनी-अपनी तेजस्विता को अधिक तेजस्वी बनाते हैं।

● **काका कालेलकर**

अभ्यास प्रश्न

● विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्यांशों में रेखांकित अंशों की व्याख्या और तथ्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिये–**

(क) चाहे दक्षिण अफ्रीका में हों या हिन्दुस्तान में, सरकार के खिलाफ लड़ाई के समय जब-जब चारित्र्य का तेज प्रकट करने का मौका आया कस्तूरबा हमेशा इस दिव्य कसौटी से सफलतापूर्वक पार हुई हैं।

इससे भी विशेष बात यह है कि बड़ी तेजी से बदलते हुए आज के युग में भी आर्य सती स्त्री का जो आदर्श हिन्दुस्तान ने अपने हृदय में कायम रखा है, उस आदर्श की जीवित प्रतिमा के रूप में राष्ट्र पूज्य कस्तूरबा को पहचानता है। इस तरह की विविध लोकोत्तर योग्यता के कारण आज सारा राष्ट्र कस्तूरबा की पूजा करता है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) किस योग्यता के कारण सारा राष्ट्र कस्तूरबा की पूजा करता है?

(ख) दुनिया में दो अमोघ शक्तियाँ हैं–शब्द और कृति। इसमें कोई शक नहीं कि 'शब्दों' ने सारी पृथ्वी को हिला दिया है। किन्तु अन्तिम शक्ति तो 'कृति' की है। महात्मा जी ने इन दोनों शक्तियों की असाधारण उपासना की है। कस्तूरबा ने इन दोनों शक्तियों में से अधिक श्रेष्ठ शक्ति कृति की नम्रता के साथ उपासना करके सन्तोष माना और जीवनसिद्धि प्राप्त की।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) कस्तूरबा कैसी महिला थीं?

(iv) शब्द और कृति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(v) गाँधीजी ने किसकी उपासना की?

(ग) यह सब श्रेष्ठता या महत्ता कस्तूरबा में कहाँ से आयी? उनकी जीवन-साधना किस प्रकार की थी? शिक्षण के द्वारा उन्होंने बाहर से कुछ नहीं लिया था। सचमुच, उनमें तो आर्य आदर्श को शोभा देनेवाले कौटुम्बिक सद्‌गुण ही थे। असाधारण मौका मिलते ही और उतनी ही असाधारण कसौटी आ पड़ते ही उन्होंने स्वभावसिद्ध कौटुम्बिक सद्‌गुण व्यापक किये और उनके जोरों पर हर समय जीवन-सिद्धि हासिल की। सूक्ष्म प्रमाण में या छोटे पैमाने पर जो शुद्ध साधना की जाती है उसका तेज इतना लोकोत्तरी होता है कि चाहे कितना ही बड़ा प्रसंग आ पड़े, व्यापक प्रमाण में कसौटी हो, चारित्र्यवान् मनुष्य को अपनी शक्ति का सिर्फ गुणाकार ही करने का होता है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) चारित्र्यवान् मनुष्य को अपनी शक्ति का क्या करना चाहिए?

(iv) चारित्र्यवान् व्यक्ति की क्या विशेषता होती है?

(v) किस साधना का तेज लोकोत्तरी होता है?

2. काका कालेलकर का जीवन-परिचय देते हुए उनके कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
3. भाषा-शैली को स्पष्ट करते हुए कालेलकर जी की साहित्यिक विशेषताएँ लिखिए।
4. काका कालेलकर का जीवन एवं साहित्यिक परिचय दीजिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कस्तूरबा में एक आदर्श भारतीय नारी के कौन-कौन-से गुण विद्यमान थे?
2. स्वयं में शिक्षा के अभाव की पूर्ति 'बा' ने किस प्रकार की?
3. शब्द और कृति से लेखक का क्या तात्पर्य है? कस्तूरबा के सम्बन्ध में सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
4. 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' पाठ से दस महत्त्वपूर्ण वाक्य लिखिए।
5. कस्तूरबा से सम्बन्धित संक्षिप्त गद्यांश लिखिए।
6. कस्तूरबा के 'मूक किन्तु तेजस्वी बलिदान' की कहानी लिखिए।

7. कस्तूरबा की मितभाषिता एवं कर्त्तव्यनिष्ठा के गुणों को प्रकट करनेवाले प्रसंगों एवं घटनाओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
8. 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' पाठ की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ लिखिए।
9. कस्तूरबा के गुणों को अपने शब्दों में लिखिए।
10. काका कालेलकर की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ लिखिए।

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. काका कालेलकर की दो रचनाओं के नाम लिखिए।
2. काका कालेलकर किस युग के लेखक माने जाते हैं?
3. राष्ट्रभाषा प्रचार को राष्ट्रीय कार्यक्रम माननेवाले हिन्दी लेखक का नाम लिखिए।
4. कस्तूरबा कौन थीं?
5. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये–
   (अ) कस्तूरबा अनपढ़ थीं। ( )
   (ब) 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' पाठ विवेचनात्मक शैली में लिखा गया है। ( )
   (स) कालेलकर जी का सम्पर्क टैगोर से नहीं था। ( )
   (द) दुनिया में 'शब्द' और 'कृति' दो अमोघ शक्तियाँ हैं। ( )

● व्याकरण-बोध

1. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम लिखिए–**
   लोकोत्तर, सत्याग्रह, गुणाकार, महत्त्वाकांक्षा, एकाक्षरी, प्रत्युत्पन्न।
2. **निम्नलिखित में समास-विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए–**
   माँ-बाप, देशसेवा, राष्ट्रमाता, प्राणघातक, बन्धनमुक्त, धर्मनिष्ठा।
3. **निम्नलिखित विदेशज शब्दों के लिए हिन्दी शब्द लिखिए–**
   अमलदार, कायम, जिद्द, हासिल, कतई, खुद।

● आन्तरिक मूल्यांकन

कस्तूरबा जी के किन गुणों ने आपको प्रभावित किया, उसका सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

●●●